ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292 PP. NO.- 313-314
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

गद्य विद्याओं पर विजयदेव नारायण साही का समाजवादी चिंतन

विद्या कुमारी

शिक्षिका, हिन्दी विभाग– अनुग्रह कन्या उच्च विद्यालय, गया (बिहार) भारत

Received- 19.07.2020, Revised- 22.07.2020, Accepted - 24.07.2020 E-mail: dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *समाजवाद को विजयदेव नारायण साही जी साहित्य का पर्याय मानते हैं और उनकी दृष्टि में समाजवादी समाज में ही साहित्य की अच्छी भूमिका हो सकती है। साही जी के राजनीतिक गुरू डॉ० राम मनोहर लोहिया थे। लोहिया ने समाजवाद की जो परिभाषा दी है, उसे साही ने "लोकतांत्रिक समाजवाद में साहित्य की भूमिका" शीर्षक से उद्धृत किया है। समाजवाद अधिक से अधिक और कम से कम आमदनी के बीच की खाई को एक पूर्व निश्चित क्रम के अनुसार लगातार कम करके किसी समय या किसी काल में हासिल करने का विचार दर्शाते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– समाजवाद, साहित्य, दृष्टि, समाजवादी समाज, भूमिका, राजनीतिक गुरू, आमदनी, निश्चित।

गद्य विद्याओं के संबंध में साही जी के समाजवादी चिंतन के प्रमाण स्वरूप निबंध था टिप्पणियाँ बहुत कम है। फिर भी कथा और आलोचना के संबंध में उनके विचार जहाँ–तहाँ उपलब्ध है। उनके आधार पर साही जी ने शिव प्रसाद सिंह के 'अलग–अलग वैतरणी' उपन्यास की व्याख्या करने के पहले यह माना कि उपन्यास की सारी शर्ते पूरी करने के बाद कहानी की शर्त स्वतः पूरित हो जाती है। बीसवीं शताब्दी पर बोझ उत्पन्न करते हुए उन्होंने स्वीकार किया कि आज का अधिकांश उपन्यास पढ़ते समय प्रायः यह लगता है जैसे किसी बड़े पुस्तकालय में उपलब्ध देश–विदेश के अखबार पढ़ रहे हैं।

कहानी का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है। कहानी मात्र चार केन्द्रीय पात्रों के इर्द–गिर्द घूमती है। इसमें साही जी स्वयं एक पात्रा है। यह बिलकुल नये ढंग की कहानी का आभास देती है। कहानी बूढ़ा माली और उसकी जवान बेटी रूपी के बीच सीमित है। कहानी यूं है कि साही जी का मित्र मानिकलाल धनवान व्यापारी का बेटा और वह किसी राजा का मकान खरीदता है जिस मकान को सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया है। जब तक राजा जीवित रहता है–एक उम्र दराज आदमी माली का काम करता है। उसकी एक जवान बेटी रूपी है। माली का फूलों के प्रति अशाध लगाव है और प्रत्येक व्यक्ति फूलों से संबंध रखता है उससे उसका संबंध सहज बन जाता है।

साही जी जब अपने मित्र मानिक लाल के साथ जब मकान को खरीदने जाते हैं तो बूढ़ माली एवं रूपी दोनों से साही जी की भेंट होती है। प्रथम भेंट में ही साही दोनों के प्रति आकृष्ट होते हैं। रूपी के युवा रूप पर और बूढ़े माली की कला पर। राजा की जमीन खरीद ली जाती है। मानिक लाल उस पर होटल बनवा देता है। अन्त में माली–फूल का काम विवश होकर छोड़ देता है किन्तु जीवनयापन करने के लिए पुनः होटल के सामने मलाई बरफ (बर्फ) बेचने का काम प्ररम्भ करता है। इसी बीच साही जी इलाहाबाद से काशी चले जाते हैं। वे बीच–बीच में मित्र के निमंत्रण पर आते हैं तो उस बूढ़े माली को जरूर देखने जाते हैं।

जब मलाई बरफ माली से नहीं बिकता तब वह अपनी जवान बेटी को मलाई बरफ बेचने के कार्य में लगा देता है– विवश होकर जो उसकी मर्यादा के विरूद्ध है, परन्तु निस्सहाय को जीने के लिए रास्ता चाहिए न। रूपी भी परिस्थितियों से समझौता कर लेती है और वह मलाई बरफ के साथ–साथ अपनी जवानी भी बेचती है।

एक दिन फिर साही जी और मानिक लाल जब होटल जा रहे थे– बूढ़े माली और रूपी ने साही जी को देखा और नमस्कार किया बड़ी अदा के साथ। मानिक लाल नमस्कार अपने लिए समझा बैठा और 'हूँ' कहकर चल दिया। साही और मानिक लाल दोनों साथ थे, इसलिए साही जी ने माली से कुछ कहा नहीं और जब मानिक लाल से अलग हुए तो साही जी ने सोचा कि चलो शाम के वक्त प्रोफेसरों से मिलने के बाद माली और रूपी का हाल पूछेंगे। जब वह प्रोफेसरों से मिलने के बाद माली के पास आये तो देखा कि मानिक लाल का नौकर सिाती माली के पास आया और एक रूपये की बढ़िया कुल्फी माँगने लगा। जब कुल्फी मिट्टी के कटोरे में भरकर माली नौकर को देने लगा तो नौकर ने मना कर दिया, उसने कहा मैं इसे नहीं ले जाउँगा। इसे रूपी के द्वारा भेजवा दो। रूपी एक साँस लेकर अपना आँचल ठीक किया और दोनों हाथों में कुल्फी के कटोरे लेकर खड़ी हो गयी। माली चुपचाप बैठा रहा। रूपी के पैर धीरे–धीरे होटल के फाटक की ओर बढ़े और

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

वह प्रकाश की परिधि से निकलकर होटल के अन्धकार में विलीन हो गयी ।

साही ने कहा है कि में चित्रलिखित सा देख रहा थ। जैसे किसी ने मुझे भारी बूट की जबरदस्त ठोकर मारकर शराब के नशे में झकझोर कर जा दिया हो। मेरी हिम्मत न हुई की आगे बढ़ूँ। कहानी यहीं समाप्त हो जाती पर हमें सोचने के लिए विवश करती है। कहानी का आरम्भ रोमोंटिक है। वातवरण इस प्रकार है कि फाल्गुन के नशीले महीने के एक ऐसे ही दिन में अपने कमरा में बैठा हुआ खिड़की से सड़क पर बहते हुए प्रवाह को देख रहा था। दोपहर का समय खाली सड़क विलासी धूप में जवानी खिल रही थी जिसे हवा रह–रह कर हिलोर कर चली जाती थी। सिनेमा की तरह सड़क पर एक के बाद एक चित्र मेरे आखों के सामने बह रहे थे। सड़क जनजीवन से जगमगा उठी यह है फाल्गुन का महीना कितना मधुर कितना मादक ।

मानिक लाल के साथ जब साही जी मकान देखने जाते हैं– उस समय का दृश्य–"मानिक लाल अन्दर चला गया और मैं फूलों के बीच टहलता रहा। सामने एक फुल था जिसके बाहर बैठा हुआ बूढ़ा माली अपनी सजावट पर संतुष्ट चुपचाप चिलम पी रहा था। उसने मुझे देखा और उसकी बूढ़ी आँखों में यह देखकर गर्व की चमक आ गयी कि मैं उसकी कला में सौन्दर्य में रलझ गया हूँ। उसके होठों पर मुस्कान दौड़ आयी। जिसने उसके मुंह पर बड़ी झुर्रियों में एक गौरव भर दिया है। मैंने जैसे ही उसके ओर देखा उसने सिर झुका कर कहा सलाम बाबू जी। माली ने साही जी को फूल देने के लिए रूपी को पुकारा 'रूपी' ओ रूपी" कुंज के भीतर से किशोरी की आवाज आयी आती हूँ। साही लिखते हें– रूपी के स्वर से अभी मैं उसके रूप का निश्चय अपनी कल्पना में कर भी नहीं पाया था कि हाथ में जगमगाते फूलों का गुलदस्ता लिए हुए वह फाल्गुन की अल्हड़ हवा की तरह कुंज से निकल पड़ी। चटकीले वसंती रंग की उसकी साड़ी उसकी कसी हुई चोली, उसकी अनजान आँखें, चंचल केश, पैरों में धमकते हुए पायल एक निगाह में सबकुछ देख गया। सारे वातावरण पर जादू छा गया। मेरी कल्पना में नहीं आया कि क्या कहूँ। बूढ़े माली ने अपनी बेटी से फूल ले लिये और मेरी ओर बढ़ा दिये। मैंने फूलों को लेकर इस उत्साह से आँखों से लगा लिया जैसे वे पीले–पीले फूल उसकी बसंती साड़ी के ही टुकड़े हों। रूपी मेरे इस कार्य को देखकर मुस्कुरा उठीं। मैं कुछ झेंप गया।

पूरी कहानी रोमांटिक वातावरण से प्रारम्भ होती है और बाद में जीवन की वास्तविकता में बदल जाती है। कहानी के अंत में रूपी को कुल्फी बेचने पर विवश होना पड़ता है तथा साथ–साथ अपने यौवन को भी, जिसके खरीददार मानिक लाल जैसे सेठ होते हैं। रूपी होटल में जाने को विवश है, सब कुछ जानते हुए भी। रूपी की गद्दार मुस्कुराहट व्यापार की विवशता है।

यह वही रूपी न थी जिसे मैंने छः महीने पहले देखा थ। उसकी अन्जान आँखों का अल्हड़पन, कुटिलता की झलक में खो गया था। भोली मुस्कान की जगह उसके आँखों पर अनुभव की छाप थी। उसकी साड़ी मैली हो गयी थी, उसके सूने पैरों में धूल भरी हुई थी। उसके उलझे हुए बाल गन्दी साड़ी के नीचे से झोंक रहे थे, उसके अंगों की कोमलता नष्ट हो गयी थी।

साही जी कहना चाहते हैं कि इसकी पूरी जिम्मेदारी इसी समाज पर है, जो धन के पीछे अपना सबकुछ बेच देता है जैसे ईमान, चरित्र, नैतिकता, मर्यादा इत्यादि, परन्तु पेट की आग भी कम भयंकर नहीं है जो देह व्यापार से लेकर तमाम कुसित प्रवृतियों को जन्म देती है जिसकी पुरी जिम्मेदारी समाज पर है। यही समाज उसे सब कुछ करने को मजबूर करता है। साही जी ने यर्थात् पर पर्दा डालने का कार्य नहीं किये हैं वे जानते हैं कि जीवन केवल कुछ आदर्शों–मूल्यों तक सीमित नहीं है। रोज ही आदर्शों पर गहरे प्रभाव पड़ रहे हैं। रूपी का रूप बनी रह सके इसमें पूंजीवादी उपभोक्ता समाज कितना बाधक है। यही इस कहानी में साही जी का अभिप्रेत जान पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जनवाजी– सन 1949, पृ०–22, नई दिल्ली ।
2. निराला का साहित्य साधना भग–1–डॉ० राम विलास शर्मा
   राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ०–298
3. छठवा दशक–विजय देव नारायण साही–पृ०–316, हिन्दुसतानी एकेडमी, इलाहाबाद ।
4. राष्ट्रभाषा संदेश–31 अक्टूबर 1982, दिल्ली ।
5. सत्ता और संस्कृति–दिनमान, 20 अगस्त, 1982, पृ०–16, दिल्ली ।

*****